15 माँग की लोच
[ELASTICITY OF DEMAND]

माँग की लोच का अर्थ
(MEANING OF ELASTICITY OF DEMAND)

माँग का नियम माँग की लोच का आधार है। माँग के नियम से हमें केवल इस बात की जानकारी होती है कि किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर उसकी माँग घटती है तथा उसकी कीमत में कमी होने पर माँग बढ़ती है। किन्तु माँग का नियम यह स्पष्ट नहीं करता है कि कीमत में परिवर्तन होने के कारण माँग में कितना परिवर्तन होता है। दूसरे शब्दों में, मूल्य में परिवर्तन होने से माँग में परिवर्तन होता है। किन्तु सभी परिस्थितियों में माँग में परिवर्तन एकसमान नहीं होता है। कुछ परिस्थितियों में मूल्य में थोड़ा-सा परिवर्तन होने से माँग में बहुत अधिक परिवर्तन होता है, जबकि कुछ परिस्थितियों में मूल्य में परिवर्तन का माँग पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता है। उदाहरणतः, यदि टी. वी. का मूल्य घट जाय तो उसकी माँग काफी बढ़ जायेगी, किन्तु नमक के मूल्य में परिवर्तन से माँग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अतः मूल्य में परिवर्तन के परिणामस्वरूप माँग में कितना परिवर्तन होगा, इसे स्पष्ट करने के लिये माँग की लोच का सहारा लिया जाता है। माँग की लोच का प्रतिपादन सर्वप्रथम **कूर्नो** (Cournot) तथा **मिल** (Mill) ने किया था, किन्तु इसका विकसित स्वरूप **प्रो. मार्शल** (Prof. Marshall) ने प्रदान किया।

संक्षेप में, माँग की लोच कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप माँग में होने वाले परिवर्तन की दर को बताती है। वस्तुतः माँग की लोच से माँग की कीमत लोच (Price elasticity of demand) का बोध होता है। इसकी परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने निम्न प्रकार दी है :

1. **प्रो. मार्शल** के अनुसार, **"किसी वस्तु की माँग की लोच अधिक या कम तब कही जायेगी जब कीमत में एक निश्चित कमी होने पर उसकी माँग में कम या अधिक वृद्धि होती है तथा कीमत में एक निश्चित वृद्धि होने पर माँग में अधिक या कम कमी होती है।"**

"The elasticity of demand in a market is great or small according as the amount demanded increases much or little for a given fall in price and diminishes much or little for a given rise in price". —*Marshall*

2. **बोल्डिग** के अनुसार, **"किसी वस्तु की कीमत में एक प्रतिशत परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग की मात्रा में जो प्रतिशत परिवर्तन होता है, उसे माँग की लोच कहते हैं।"**

"The elasticity of demend may be defined as the percentage change in the quantity demanded which would result from one percent change in its price." —*Boulding*

3. **केयर्नक्रास** के अनुसार, **"किसी वस्तु की माँग की लोच वह गति या दर है जिस पर कीमत में परिवर्तन होने से खरीदी गयी मात्रा में परिवर्तन होता है।"**

"The elasticity of demand for a commodity is the rate at which the quantity bought changes as the price changes." —*Cairncross*

4. **मेयर्स** के अनुसार, **"माँग की लोच किसी दिए हुए माँग-वक्र पर किसी वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप माँग की मात्रा में सापेक्षिक परिवर्तन की माप है।"**

"The elasticity of demand is a measure of the relative change in amount purchased in response to a relative change in price on a given demandcurve." —*Meyers*

Scanned with CamScanner

5. स्टोनियर एवं हेग के अनुसार, **"किसी वस्तु की कीमत में कमी के परिणामस्वरूप माँग में होने वाले परिवर्तन की दर की व्याख्या करने के लिये कुछ अर्थशास्त्रियों द्वारा माँग की लोच का प्रयोग किया जाता है।"**

"Elasticity of demand is the technical term used by the economists to describe the degree of responsiveness of the demand for a commodity to fall in the price." —*Stonier and Hague*

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम ऐसा कह सकते हैं कि किसी वस्तु की कीमत में किसी खास प्रतिशत के परिवर्तन से उस वस्तु की माँग में जितना प्रतिशत परिवर्तन होता है, वह माँग की लोच है।

माँग की लोच के प्रकार
(TYPES OF ELASTICITY OF DEMAND)

माँग की लोच विभिन्न प्रकार की होती है। अध्ययन की सुविधा के ख्याल से इसे निम्न प्रकार वर्गीकृत किया गया है :

1. **माँग की कीमत लोच** (Price elasticity of demand)—किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप वस्तु की माँग की मात्रा में जो परिवर्तन होता है, उसे माँग की कीमत लोच कहते हैं। माँग की लोच का आशय माँग की कीमत लोच से ही होता है। इसके लिये निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग होता है :

$$Ep = \frac{\text{माँग की मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{मूल्य में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

2. **माँग की आय लोच** (Income elasticity of demand)—माँग की मात्रा पर केवल कीमत का ही प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि अन्य तत्वों का भी प्रभाव पड़ता है। उन तत्वों में से एक महत्वपूर्ण तत्व उपभोक्ता की आय है। अर्थात् उपभोक्ता की आय में परिवर्तन के फलस्वरूप वस्तु की माँग में जो परिवर्तन होता है, उसे माँग की आय लोच कहते हैं। इसकी गणना के लिये निम्नांकित सूत्र प्रयुक्त होता है :

$$Ei = \frac{\text{माँग की मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{आय में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

माँग की आय लोच भी तीन प्रकार की होती हैं; जो इस प्रकार हैं :

(i) **माँग की धनात्मक आय लोच** (Positive income elasticity of demand)—जब उपभोक्ता की आय में परिवर्तन तथा माँग में परिवर्तन एक ही दिशा (direction) में हो; तो इसे माँग की धनात्मक आय लोच कहते हैं।

(ii) **माँग की ऋणात्मक आय लोच** (Negative income elasticity of demand)—जब उपभोक्ता की आय में वृद्धि के अनुपात में उसके द्वारा वस्तु के क्रय पर कम व्यय किया जाता है तो इसे माँग की ऋणात्मक आय लोच कहते हैं। उदाहरणत:, गिफिन वस्तुएँ।

(iii) **माँग की शून्य आय लोच** (Zero income elasticity of demand)—जब उपभोक्ता की आय में परिवर्तन के साथ-साथ वस्तु की माँग में शून्य परिवर्तन होता है, तो इसे माँग की शून्य आय लोच कहते हैं।

3. **माँग की आड़ी लोच** (Cross elasticity of demand)—जब किसी X वस्तु की माँग में परिवर्तन किसी दूसरी Y वस्तु के मूल्य में परिवर्तन से हो, तो उसे आड़ी लोच कहेंगे। इसके लिये निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है :

$$Ec = \frac{\text{X वस्तु की माँग में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{Y वस्तु के मूल्य में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

Scanned with CamScanner